श्री बूढ़ा अमरनाथ

जम्मू कश्मीर राज्य की शीतकालीन राजधानी जम्मू नगर से 240 किलोमीटर दूरी पर भारत पाकिस्तान नियंत्रण रेखा से सटे पुंछ जिला मुख्यालय पुंछ नगर जिसका प्राचीन नाम पुलस्त नगरी है वहां से 22 किलोमीटर की दूरी पर पांचाल पहाड़ी श्रृंखलाओं की गोद में बसे कस्बे के राजपुरा में स्थित भगवान भोलेनाथ का अत्यन्त प्राचीन मन्दिर है जो कि बूढ़ा अमरनाथ के नाम से प्रसिद्ध है। मनोरम दृश्य प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण क्षेत्र में स्थित इस स्थान के बारे में यह कहा जाता है कि यहां पर भगवान शंकर भोलेनाथ ने पहली बार अपनी पत्नी देवी पार्वती को अमरता प्रदान करने के लिए अमर कथा सुनाई थी। परन्तु पार्वती के कथा सुनते–सुनते सो जाने के कारण वह कथा नहीं सुन पाई थी। कहते हैं कि जब माँ शक्ति ने पर्वत राज हिमाचल के घर देवी पार्वती के रूप में अपना 109वां जन्म लिया तो पहले के 108 जन्मों की ही तरह इस जन्म में भी देवी ने भगवान शंकर को पति के रूप में पाने के लिए हिमालय में वर्षों तक घोर तप किया जिससे प्रसन्न होकर भोले नाथ ने देवी पार्वती से विवाह रचाया और कैलाश में निवास कर रहे थे कि एक दिन देवी पार्वती भगवान भोलेनाथ से बोली हे प्रभु मैने आपको अपने पति के रूप में प्राप्त करने के लिए 109 बार इस पृथ्वी पर जन्म लिया है। हे नाथ अब आप मुझे भी अमर कथा सुनाकर अमरत्व प्रदान करें ताकि मैं भी आवागमन के चक्कर से मुक्त हो जाऊँ। इतना कहने के बाद देवी पार्वती भोले नाथ से अमर कथा सुनाने की हठ करने लगी। जब देवी अमर कथा सुनने का बार–बार हठ करने लगी तो भगवान शंकर देवी सहित नंदी पर सवार हो कर किसी निर्जन स्थल की तलाश करने

लगे तो वह घूमते हुए इस स्थान पर आ पहुँचे जहां पर ऊंचे–ऊंचे देवदार के वृक्षों से भरा निर्जन स्थल जिसके साथ ही कलकल करते हुए निर्मल जलधारा बह रही थी। भगवान को यह स्थल अच्छा लगा और उन्होंने यहां पर देवी पार्वती को अमर कथा सुनानी शुरू कर दी और वे ध्यान मगन हो कथा सुना रहे थे। जब अमर कथा समाप्त हुई तो भगवान भोले नाथ ने पार्वती से पूछा हे प्रिये कैसी लगी अमर कथा तो इस पर देवी बोली हे नाथ मुझे क्षमा करें क्योंकि मैंने तो पूरी अमर कथा सुनी ही नहीं कथा सुनते–सुनते मैं गहरी निद्रा में चली गई थी। इस पर भगवान को क्रोध आ गया और वह कहने लगे कि अगर तुम सोई हुई थी तो जब मैं कथा सुना रहा था तो हूं हूं की ध्वनि कौन कर रहा था। कहते हैं कि, इतना कहने के बाद जब भगवान शंकर ने अपनी दिव्य दृष्टि दौढ़ाई तो उन्होने देखा कि पास ही एक पेड़ के खोखल में कबूतर के दो बच्चे बैठे हुए थे जो हूं हूं की ध्वनि निकाल रहे थे। जिसे कथा सुनाते हुए भगवान भोले नाथ ने पार्वती की आवाज समझ कर पूरी कथा सुनाते हुए भगवान भोले नाथ ने पार्वती की आवाज समझ कर पूरी अमर कथा सुना दी थी। कबूतर के बच्चों की इस हरकत पर जब क्रोध से भोले नाथ ने उन्हें भस्म करने के लिए त्रिशूल उठाया तो देवी पार्वती ने उन्हें शान्त करते हुए कहा हे नाथ आप व्यर्थ में इन पर क्रोध न करें। आपने ही इन्हें अमर कथा सुना कर अमरता प्रदान की है ऐसें में इन्हे भस्म करना धर्म के विरूद्ध है। देवी के इस आग्रह पर भोले नाथ शांत हुए और उसके बाद कश्मीर में उस स्थान पर जहां आप अमरनाथ गुफा में हिमलिंग के दर्शन करते हैं वहां पर देवी पार्वती को अमर कथा सुनाकर अमरता प्रदान की थी। कहते हैं आज भी कश्मीर स्थित अमरनाथ गुफा में भगतों को कबूतरों का वह जोड़ा दिखाई देता है जिसने श्री बूढ़ा अमरनाथ में अमरकथा सुन कर अमरता पाई थी। कुछ लोगों

का यह भी मानना है कि कबूतरों का वह जोड़ा कभी–कभी बूढ़ा अमरनाथ में भी शिव भक्तों को दर्शन देता है।

श्री बूढ़ा अमरनाथ के बारे में यह कथा भी प्रचलित है कि इस स्थल को लंका महाराजा रावण के दादा महा ऋषि पुलस्त ने धार्मिक महत्व प्रदान करवाया है। यह कहा जाता है कि सतयुग में एक दिन जब महाऋषि पुलस्त ध्यान में बैठे हुए थे तो उन्हें अंतर आत्मा से इस बात का बोध हुआ कि कश्यप देश में पांचाल पहाड़ी श्रृंखला की गोद में वह स्थान है, जहां पर भगवान शिव ने पहली बार देवी पार्वती को अमरकथा सुनाई थी। इस बात का बोध होने के बाद महाऋषि पुलस्त अगले ही दिन वर्तमान श्री बूढ़ा अमरनाथ में आ पहुंचे जहां उन्होने पत्थर की एक शिला में बनी इस छोटी सी गुफा में देवो के देव महादेव शम्भू भोलेनाथ के दर्शन प्राप्त करने के लिए घोर तप शुरू कर दिया। कहते हैं कि भगवान के दर्शनों के लिए समाधि लगाये हुए महाऋषि पुलस्त को कई वर्ष बीत गये तो ऐसे में एक दिन भगवान भोलेनाथ शंकर उनके तप से प्रसन्न होकर उनके सामने प्रकट हो गये। भगवान को अपने सामने देखकर पुलस्त नतमस्तक होकर उनकी स्तुति करने लगे। महादेव आप कृपालु हैं दयालु हैं आज इस स्थान पर आप के दर्शन कर मैं धन्य हो गया हूँ। इस पर भोलेनाथ बोले हे वत्स मैं तेरे तप से अत्यन्त प्रसन्न हुआ हूँ और तू मांग क्या मांगना चाहता है। पुलस्त ने विनती करते हुए कहा जिसे आपने स्वयं दर्शन दिये हों उसे किसी और वस्तु की क्या आवश्यकता है। मैं तो आप को साक्षात देखकर धन्य हो गया। मेरा जीवन सफल हो गया है। इस पर भी जब भगवान भोले नाथ ने पुलस्त से बार–बार कुछ मांगने को कहा तो पुलस्त ऋषि भोलेनाथ से विनती करने लगे हे प्रभु इस दास पर इतनी ही दया दिखलाना चाहते हैं तो नाथ इस स्थल को जहां आपने मुझे अपने दर्शनों से कृतार्थ किया है इसे ऐसा धार्मिक महत्व प्रदान करें कि युगों–युगों

तक आपके भक्तजन यहां आते रहें। कहते हैं कि पुलस्त ऋषि के आग्रह पर भगवान भोले नाथ ने मुस्कराते हुए तथास्तु कहा और स्वंय वहां से अदृश्य हुए तो एक ही चट्टान की इस गुफा में भगवान शंकर का स्वंयभू शिवलिंग प्रकट हुआ जो कि देखने में एक सफेद चकमक की तरह था और उसकी बनावट चट्टान जैसी थी जिसके कारण आज भी कई शिव भक्त इसे बाबा चट्टानी कहकर पुकारते हैं। पुलस्त ऋषि को दिये वरदान स्वरूप स्वयंभू शिवलिंग के रूप में प्रकट होने के उपरान्त इस स्थान पर पुलस्त ऋषि ने वर्षों तक तप किया जिसके चलते इस पूरे क्षेत्र का नाम पुलस्त नगरी पड़ गया जो कि अपभ्रंश होते होते आप पुंछ हो गया है। श्री बुढ़ा अमरनाथ मंदिर के साथ बहने वाली नदी का नाम पुलस्त गंगा पड़ा जिसे आज भी पाप नाशिनी गंगा मानकर हज़ारों श्रदालू यहां पर स्नान करते हैं। श्री बूढ़ा अमरनाथ में भक्तों द्वारा मानी जाने वाली हर मन्नत को भगवान भोले नाथ पूरा करते हैं।

बाबा चट्टानी से श्री बूढ़ा अमरनाथ

महाऋषि पुलस्त की तपस्थली में भगवान शंकर के चट्टानी रूप में प्रकट स्वयंभू शिवलिंग का नाम श्री बुढ़ा अमरनाथ पड़ने के बारे में एक कथा प्रचलित है कि आज से करीब दो हजार वर्ष पूर्व पुंछ जिले का वर्तमान गांव लोरन जिसे उस समय लोवरकोट के नाम से जाना जाता था। यह क्षेत्र तत्कालीन जम्मू कश्मीर राज्य जिसमें काबुल,कंधार, गिलगित और वर्तमान जम्मू कश्मीर शामिल था। लोवरकोट उसकी राजधानी हुआ करती थी। जिस पर उस समय रानी चन्द्रिका का शासन था। राजकाज में निपुण रानी चन्द्रिका अत्यन्त दयालु एवं शिव भगत थी। रानी चन्द्रिका हर वर्ष श्रावण मास में लोवर कोट से कश्मीर स्थित श्री अमरनाथ गुफा में हिमलिंग की पूजा अर्चना के बाद ही व्रत तोड़ती थी। कहते हैं कि एक बार जब रानी श्रावण मास में श्री अमरनाथ की यात्रा पर जाने की तैयारी कर ही रही थी कि अचानक मौसम खराब हो गया और देखते ही देखते क्षेत्र में भारी बर्फबारी होने से लोवरकोट से अमरनाथ जाने के सभी मार्ग बंद हो गए। जब काफी समय तक मौसम सही नहीं हुआ तो रानी चन्द्रिका ने यह सोच कर की भगवान भोले नाथ मेरी किसी भूल से रूष्ट हो गए हैं। जो मैं इस बार उनके दर्शन नहीं कर पाई हूँ। इसी सोच के चलते रानी चन्द्रिका ने अन्न जल का त्याग कर दिया। ऐसे में कुछ ही दिनों में रानी अत्यंत दुर्बल हो गई। चलने फिरने में असमर्थ रानी को पकड़ कर शय्या से उठाया जाता था। रानी हर समय अपने कमरे में बंद पल–पल मृत्यु का इंतजार कर रही थी कि इसी बीच एक दिन रानी ने देखा की उसके कमरे में एक बूड़े साधू ने प्रवेश किया और उसके पास आकर बोले हे रानी तू इतनी परेशान क्यों है कि तू अमरनाथ के दर्शन नहीं कर पाई। रानी तेरे इस महल

से 10 मील दूरी पर भगवान भोले नाथ शिव का लुप्त स्थान है जिसके दर्शनों का लाभ भी श्री अमरनाथ के हिमलिंग समान है। तुम उसके दर्शन करो। कहते हैं कि भरी दोपहर में रानी को स्वप्न में बूड़े बाबा के दर्शन दिए जाने के कुछ ही पल बाद महल के द्वार पर श्वेत वस्त्रधारी एक साधू ने अलख जगाई और भिक्षा की याचना की। जिस पर रानी की दासियां साधू को भिक्षा देने द्वार पर पहुंची तो साधू ने दासियों के हाथों भिक्षा लेने से इंकार करते हुए कहा कि हम भिक्षा तभी लेंगे जब रानी स्वयं अपने हाथों से भिक्षा देगी। साधू की बात सुनकर दासियां कहने लगी महाराज आप ऐसा हठ न करें क्योंकि महारानी अत्यंत दुर्बल हैं चलना फिरना तो दूर वह स्वयं बिस्तर से उठ भी नहीं सकती हैं। इस पर भी साधू नहीं माना और दासियों से कहा की तुम जाकर रानी को मेरा हठ बताओ की मैं उसके हाथों से भिक्षा लूंगा। साधू की ज़िद पर जब दासियां महल में रानी के आवास में गई तो उन्होनें देखा की रानी अपने कमरे में पूरी तरह स्वस्थ खड़ी हैं। दासियों ने आश्चर्य के साथ रानी को देखते हुए उसे प्रणाम कर साधू का हठ बताया तो रानी तत्काल अपने हाथों से भिक्षा का थाल लिए जब द्वार पर पहुंची तो वहां खड़े साधू को देखकर हैरान हो गई कि जिस साधू ने उसे स्वपन के दर्शन दिए थे वह उसके सामने खड़ा था। रानी को देखते ही साधू बोला तुम्हें मैंने जो बताया था तुम्हें उसका स्मरण है तो रानी ने स्वीकृति में सर हिलाया तो साधू बोला फिर देर किस बात की है चलो भगवान भोले नाथ के दर्शनों को चलें। रानी के आदेश पर कुछ ही क्षणों में राजमहल से रानी की पालकी के साथ सैनिकों का काफिला शोभा यात्रा के रूप में बूढ़े साधू के साथ चल पड़ा। दस मील महल से नीचे की तरफ चलने पर जब काफिला चौड़ और देवदार के घने वनों में पहुंचा साधू महात्मा ने अपने हाथ पकड़े त्रिशूल से एक स्थान पर निशान लगाया तो रानी की आज्ञा पर उस स्थान की खुदाई का कार्य शुरू किया

गया। देखते की देखते एक ही चट्टान का यह मंदिर जिसे आज शिव पालकी कहा जाता है दिखाई दिया जिसमें चार द्वार बने हुए थे। जब पालकी के भीतर की सफाई की गई तो वहां पर यह भगवान शिव का चट्टानी शिवलिंग नजर आया। कहा जाता है कि साफ सफाई के बाद जब रानी चन्द्रिका ने उस बूढ़े साधू के साथ मंदिर में पूजा अर्चना के लिए प्रवेश किया तो पलक झपकते ही बूढ़ा साधू अदृश्य हो गया। साधू के अदृश्य होते ही रानी बड़ी ही करूणा से स्तुति करने लगी हे महादेव आप स्वंय मुझे इस स्थान तक लाए, आप बूढ़े बाबा के रूप में मेरे साथ साथ रहे और मै अभागी आपको पहचान न सकी आपकी महिमा जान न सकी। आपने बूढ़े के रूप में मुझे दर्शन देकर मेरे प्राणों की रक्षा की है उसी दिन से रानी इस स्थान को श्री बुढ़ा अमरनाथ कह कर पुकारने लगी। वही नाम आज भी पुकारा जाता है। कहते हैं रानी चन्द्रिका को स्वयं भगवान शिव द्वारा दिखाया गया यह स्थान सैकड़ों वर्षों के बाद भगवान की महिमा से हुई प्राकृतिक उथल पुथल और परिवर्तन से एक बार फिर अदृश्य हो गया था जिसे दक्षिण भारत के एक साधू स्वामी चन्द्रचूढ़ मुनी ने उजागर कर वर्षों तक यहां तप किया था जो कि आज तक भगवान शिव के भगतों के लिए साधना का प्रमुख केन्द्र है इस मंदिर के साथ ही पूर्व दिशा में स्वामी चन्द्रचूढ़ मुनी की समाधी बनाई गई है जो कि भगतों के लिए आस्था का केन्द्र है।

श्री बूढ़ा अमरनाथ यात्रा

सड़क मार्ग पर स्थित होने के कारण श्री बूढ़ा अमरनाथ में वैसे तो वर्ष भर यात्रियों का आना जाना लगा रहता है जो कि यहां आकर बाबा श्री बूढ़ा अमरनाथ चट्टानी के दर्शन कर मन की मुरादें पूरी करते हैं। परन्तु श्रावण मास में श्री बूढ़ा अमरनाथ के दर्शन जलाभिषेक और यात्रा का विशेष महत्व माना जाता है। जिसके कारण श्रावण मास में यहां पर हर दिन हजारों की संख्या में शिवभक्त आते हैं। इस महीनें में पूर्णिमा पर यहां मेला लगता है जिसमें देश भर से लाखों श्रदालू भाग लेते हैं। श्री बूढ़ा अमरनाथ यात्रा में जहां जम्मू कश्मीर में चल रहे आतंकवाद के कारण कुछ वर्षों से यहां आने वाले श्रदालुओं की संख्या में भारी कमी आ गयी थी। वहीं कुछ वर्ष पूर्व विश्व हिन्दु परिषद एवं बजरंग दल की राष्ट्रीय इकाई ने श्री बूढ़ा अमरनाथ मंदिर ट्रस्ट, श्री दशनामी अखाड़ा मंदिर समीति श्री संनातन धर्म सभा और पुंछ के विभिन्न धार्मिक संगठनों के सहयोग से राष्ट्रीय स्तर की दस दिवसीय श्री बूढ़ा अमरनाथ यात्रा शुरू की है जो कि हर वर्ष श्रावण मास की पूर्णिमा/रक्षाबंधन से 12.13 दिन पहले शुरू होकर रक्षाबंधन से तीन दिन पूर्व सम्पन्न होती है। इस यात्रा में विश्व हिन्दू परिषद व बजरंग दल के अहवान पर इन दिनों देश भर से हजारों श्रदालू बाबा भोले नाथ का गुणगान करते हुए यहां आकर भगवान शंकर के चट्टानी शिवलिंग की पूजा अर्चना एवं दर्शन करते हैं। इस यात्रा में देश भर से आने वाले श्रदालू रेल एवं सड़क मार्ग से जम्मू पहुंचते हैं जहां पर उपरोक्त संगठनों द्वारा यात्रियों को जम्मू पहुंचते हैं जहां पर उपरोक्त संगठनों द्वारा यात्रियों को जम्मू में रात्रि विश्राम और भोजन कराया जाता है। जम्मू से अगले दिन सभी यात्री सुबह तड़के हर–हर

महादेव के जयघोष लगाते हुए बसों में बैठकर श्री बूढ़ा अमरनाथ के लिए रवाना होते हैं। रास्ते में सुन्दरबनी में जहां यात्रियों को निःशुल्क नाश्ता कराया जाता है वहीं राजौरी में दोपहर का भोजन कराया जाता है। देर शाम को यात्रियों के पुंछ पहुंचने पर जिला प्रशासन एवं स्थानीय लोगों द्वारा यात्रियों का स्वागत किया जाता है। पुंछ नगर में ही यात्रियों के लिए दशनामी अखाड़ा में धार्मिक संगठनों द्वारा निःशुल्क भोजन एवं रात्रि विश्राम की व्यवस्था की जाती है। पुंछ से अगले दिन यात्री फिर अपनी बसों से 22 किलोमीटर दूर मंडी कस्बे में श्री बूढ़ा अमरनाथ पहुंचते हैं जहां पर सर्वप्रथम मंदिर के साथ बहने वाली पुलस्त गंगा अथवा अमरकुंड में स्नान कर मंदिर में पूजा अर्चना करते हैं। श्री बूढ़ा अमरनाथ मंदिर में वैसे तो वर्ष भर मंदिर समीति की तरफ से निःशुल्क लंगर की व्यवस्था रहती है। वहीं यात्रा के दैरान मंदिर के बाहर यात्रियों के लिए विभिन्न संगठनों द्वारा लंगर लगाये जाते हैं जिसमें यात्रियों को स्वादिष्ट व्यंजन परोसे जाते हैं। भगवान शंकर के दर्शन करने के उपरान्त जलपान ग्रहण कर यात्रियों का यह कारवां पुनः जम्मू की तरफ रवाना होता हैं इस प्रकार यह सिलसिला करीब 10 दिनों तक चलता है।

श्री बूढ़ा अमरनाथ छड़ी यात्रा

जहां रक्षा बंधन से 12–13 दिन पूर्व विश्व हिन्दू परिषद व बजरंग दल द्वारा यात्रा शुरू की जाती है। वहीं प्राचीन समय से हर वर्ष रक्षाबंधन के तीन दिन पूर्व श्री बूढ़ा अमरनाथ के लिए छड़ी यात्रा का आयोजन किया जाता है। पुंछ नगर स्थित श्री दशनामी अखाड़ा में रखी गयी प्राचीन चांदी की छड़ी जिसे शिव पार्वती का रूप माना जाता है रक्षा बंधन के तीन दिन पूर्व इसी मंदिर में वैदिक मंत्रों के द्वारा इस छड़ी की पूजा अर्चना की जाती है जिसमें ज़िला प्रशासन के अधिकारियों, साधुओं और स्थानीय लोगों द्वारा भाग लिया जाता है। करीब तीन घंटो तक चलने वाली इस छड़ी पूजन में संतजनों द्वारा प्रवचन भी दिये जाते हैं जिसके उपरान्त पवित्र छड़ी को श्री दशनामी अखाड़ा मंदिर के बाहर लाया जाता है जहां पर जम्मू कश्मीर पूलिस के जवानों द्वारा छड़ी को गॉर्ड ऑफ ऑनर/सलामी दी जाती है। इसके उपरान्त बैंड बाजों के साथ छड़ी यात्रा मंडी स्थित श्री बूढ़ा अमरनाथ के लिए प्रस्थान करती है। इस यात्रा में चल रहे हजारों महिला पुरूष एवं बच्चे भगवान शिव का गुणगान करते हुए पैदल अथवा वाहनों में भगवान के धाम की ओर धीरे–धीरे आगे बड़ते जाते हैं। इस दौरान यात्रा मार्ग पर विभिन्न संगठनों द्वारा शिव भक्तों के लिए चाय नाश्ते एवं फलों के निःशुल्क स्टॉल लगाये जाते हैं। सुबह श्री दशनामी अखाड़ा से शुरू हुई यात्रा दोपहर करीब 1 बजे पुंछ और मंडी के बीच स्थित माँ चंडिका के धाम चंडक कस्बे में पहुंचती है जहां पर पुंछ की एक संस्था द्वारा यात्रियों को दोपहर का भोजन कराया जाता है। चंडक में भोजन करने के उपरान्त यात्री फिर श्री बूढ़ा अमरनाथ की और प्रस्थान करते हैं जहां पर छोटे–छोटे दलों में यात्री भजन कीर्तन एवं जयकारे लगाते हुए चलते हुए दिखाई देते

हैं। शाम चार बजे यह यात्रा श्री बूढ़ा अमरनाथ से करीब 4 किलोमीटर पूर्व गावं सेकलू स्थित माँ दूर्गा के मंदिर पहुंचती हैं जहां पर ग्रामीणों एवं सेना द्वारा यात्रियों को शाम की चाय पिलाई जाती है। करीब एक घंटे बाद पवित्र छड़ी यात्रा श्री बूढ़ा अमरनाथ मंदिर के बाहर पहुंचती है जहां पर मंदिर ट्रस्ट के सदस्यों, सीमा सुरक्षा बल और जिला प्रशासन द्वारा छड़ी का स्वागत कर उसे आदर सहित मंदिर प्रांगण में लाया जाता है। यहां पर एक बार फिर छड़ी को पुलिस द्वारा सलामी दी जाती है जिसके उपरान्त मंदिर ट्रस्ट के सदस्यों द्वारा छड़ी का मंत्रोच्चारण सहित पूजन कर फिर इस पवित्र छड़ी को बाबा चट्टानी भगवान बूढ़े अमरनाथ शिवलिंग पर स्थापित किया जाता है। जिसके साथ ही मंदिर में तीन दिवसीय यात्रा एवं मेला शुरू हो जाता है जो कि रक्षा बंधन के एक दिन बाद तक जारी रहता है। छड़ी यात्रा के साथ ही श्री बूढ़ा अमरनाथ में रक्षा बंधन तक हर दिन श्रदालुओं की भारी भीड़ लगने लग जाती है। जिसमें हर दिन हजारों श्रदालू कतारों में लगे भगवान के दर्शनों के लिए अपनी बारी का इंतजार करते दिखाई देते हैं। इस यात्रा के दौरान यहां पर आने वाले यात्रियों की हर प्रकार की सुविधा का श्री बूढ़ा अमरनाथ मंदिर ट्रस्ट जिला प्रशासन और दर्जनों सामाजिक एवं धार्मिक संगठनों द्वारा ध्यान रखा जाता है। इस अवसर पर मंदिर के आसपास सैकड़ों की संख्या में 24 घंटे लंगरों की व्यवस्था रहती है। जहां पर लोग प्रेमभाव से यात्रियों का स्वागत सत्कार करने को तत्पर रहते हैं।

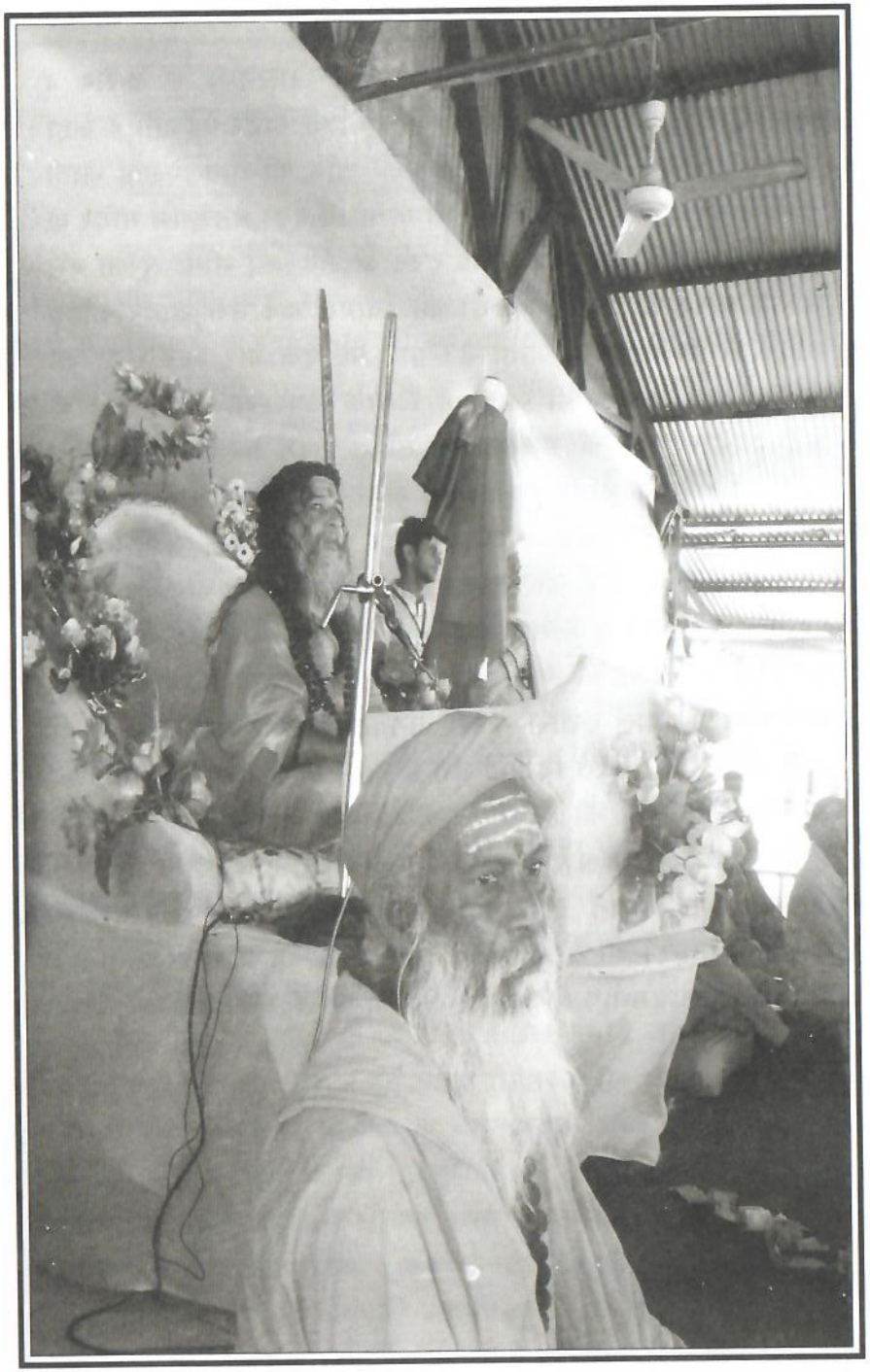

18

19

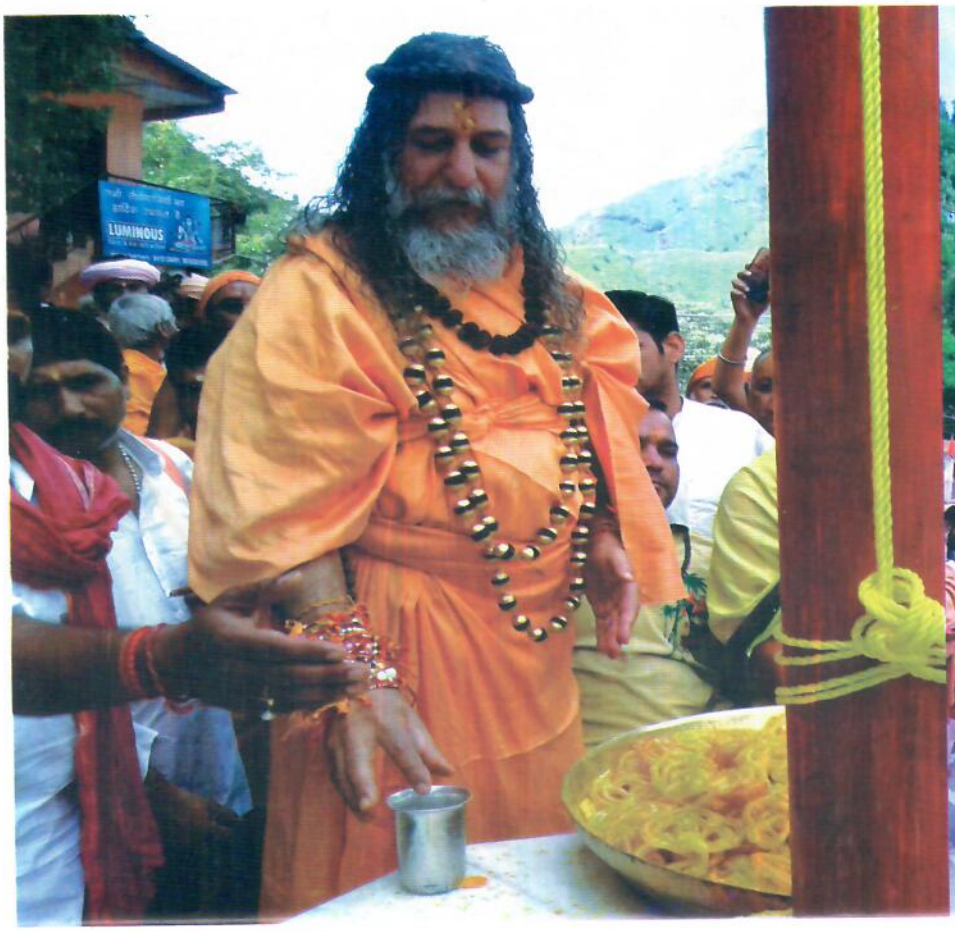
LUMINOUS

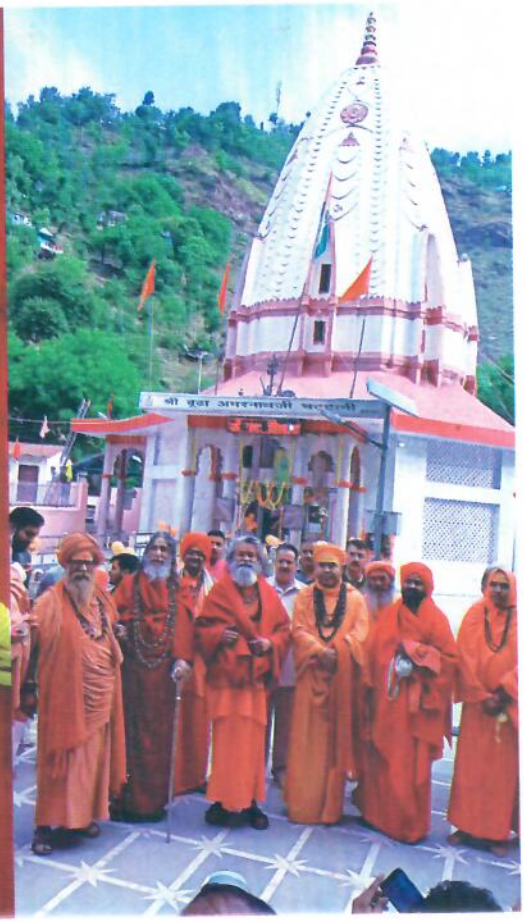

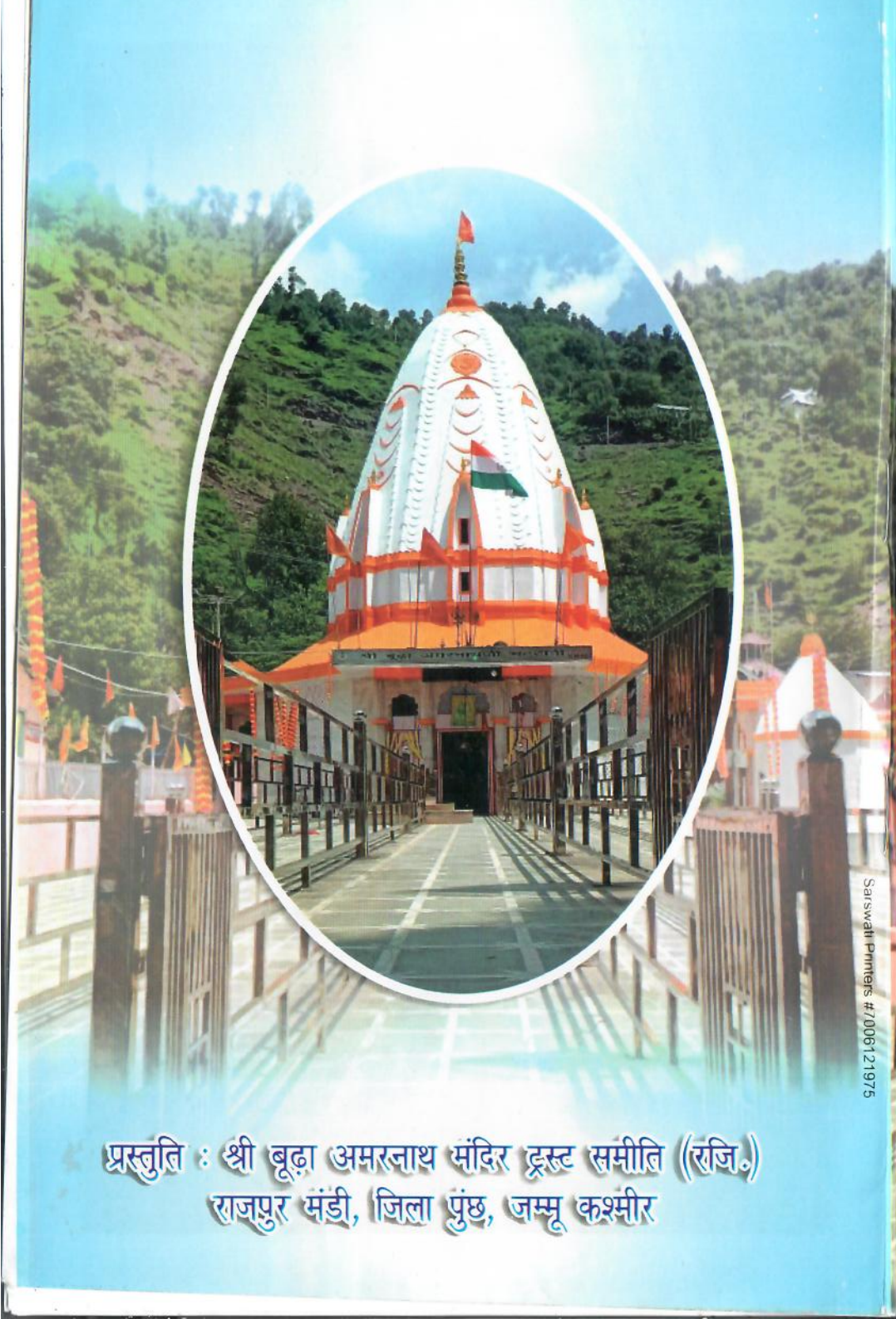

प्रस्तुति : श्री बूढ़ा अमरनाथ मंदिर ट्रस्ट समीति (रजि.)
राजपुर मंडी, जिला पुंछ, जम्मू कश्मीर

Sarswati Printers #7006121975

जय जय बाबा भोले नाथ चट्टानी

श्री बूढ़ा अमरनाथ कथा एवं यात्रा वृतांत